प्रशासक प्रभाग

शान्तिवन, आबू रोड में 'मूल्यनिष्ठ प्रशासन के लिए राजयोग चिंतन'
(Rajyoga Meditation for Value-based Administration)
के विषय पर आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन सत्र का समाचार

दिनांक: 19 से 22 नवम्बर, 2015 के दौरान शांतिवन केम्पस, आबू रोड, राजस्थान में प्रशासकों, व्यवस्थापकों तथा प्रबन्धकों के लिए निर्दिष्ठ विषय पर सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया।

परमपिता परमात्मा शिव एवं अव्यक्त ब्रह्मा बाबा के संयुक्त अव्यक्त स्वरूप की अवतरण भूमि - शांतिवन प्रबल आध्यात्मिक उर्जाओं से सम्पन्न एवं सुन्दर केम्पस में सम्मेलन के दौरान स्वागत एवं उद्घाटन सत्र, विभिन्न विषयों पर 6 सत्र, एक पेनल डिस्कशन, समापन सत्र, चार राजयोग चिंतन सत्र तथा अनुभव सत्र का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में नेपाल एवं भारत देश के विभिन्न राज्यों से लगभग 1200 प्रतिनिधि मेहमानों ने भाग लिया। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की मूख्य प्रशासिका **परम श्रद्धेय राजयोगिनी दादी जानकी जी** ने समापन सत्र में आशीर्वचन देते हुए कहा कि परमात्मा का अनुसरण करना अर्थात् उसे प्यार करके अपनी जींदगी में उनकी श्रीमत को धारण करना। मन, वाणी, कर्म में पवित्रता आने से सत्यता आती है। संसार में न्यारा रहकर परमात्मा को जानना है, पहचानना है, सत्य बोलना है, धीरे बोलना है, नम्रता और मधुरता लानी है। आज से 'करना पडता है' - यह भाषा नहीं बोलनी है। दादी जी के प्रेरणायुक्त महावाक्यों से सभा में उपस्थित सभी ने स्टेज पर से दादी जी की पवित्र दृष्टि पाकर अपने अन्दर आध्यात्मिक शक्तियों के संचार का अनुभव किया।

सम्मेलन के स्वागत एवं उद्घाटन सत्र का समाचार निम्नलिखित है:-

सत्र के प्रारम्भ में मधुरवाणी गृप ने मधुरगीत द्वारा बांटवा (गुजरात) की कुमारी कोमल ने सुन्दर स्वागत नृत्य द्वारा तथा अन्त में भोपाल की कुमारी आकृति ने नृत्य द्वारा सभी को मंत्रमुग्ध किया।

मंचासीन वक्ताओं के प्रेरक उद्बोधन के कुछ वाक्यांश निम्नलिखित है:

ब्रह्माकुमार हरीश भाई, मुख्यालय संयोजक, प्रशासक प्रभाग, आबू पर्वत ने

आगन्तुक मेहमानों का शेर-शायरी द्वारा सुंदर स्वागत किया और कहा कि भगवान के घर पधारने से आप सबकी किस्मत ही बदल गई है, नये जीवन के लिए नई प्रेरणायें यहाँ से प्राप्त होगी।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अवधेश बहन, राष्ट्रीय संयोजिका, प्रशासन प्रभाग, भोपाल ने सम्मेलन के सन्दर्भ में बताया कि परमात्मा द्वारा शिक्षित राजयोग द्वारा राज-कारोबार अर्थात् प्रशासन सुंदर रीति कर सकते है, स्वर्णिम संसार के प्रशासन का आधार पवित्रता की शक्ति है जो कोई भी व्यक्ति परमात्मा से सम्बन्ध जोडकर प्राप्त कर सकता है।

मंच पर बिराजमान मुख्य मेहमान तथा वरिष्ठ राजयोगी भाई-बहनों ने दीप-प्रज्ज्वलन विधि द्वारा सम्मेलन का उद्घाटन किया।

सत्र के मुख्य मेहमान **भ्राता कृष्णप्रसाद ढकाल**, मीशन के डेप्युटी चीफ तथा मीनीस्टर, नेपाल सम्बेसी, नई दिल्ली ने प्रवचन में कहा कि प्रभावशाली प्रशासन के लिए प्रशासक में राजयोग के अभ्यास द्वारा अन्दर व बाहर शांति होनी चाहिए तथा उन्हों को मूल्यों की शिक्षा दी जानी चाहिए। आध्यात्मिक ज्ञान से भ्रष्टाचार मुक्त और सशक्त प्रशासन कर सकते है।

ब्रह्माकुमारी उर्मिल बहन, ज़ोनल को-आर्डिनेटर, प्रशासन प्रभाग, गुडगांव ने राजयोग चिंतन का अभ्यास कराते हुए कहा कि मेडिटेशन से अनेक बोज़ एवं रूकावटें खत्म हो जाती है और अपने विचारों का नियंत्रण भी कर सकते है। वाणी आत्मा की रजत स्थिति है लेकिन शांति स्वर्णिम स्थिति है।

सत्र की अध्यक्षा **राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी आशा बहन**, निदेशिका, ओम् शांति रीट्रिट सेंटर, तथा चेरपर्सन, प्रशासन प्रभाग, दिल्ली ने अध्यक्षीय प्रवचन में राजयोग का महत्व बताते हुए कहा कि राजयोग में सभी योग का समन्वय है और सहज भी है, जिससे मन, वचन स्वस्थ होता है। बीमारियों में राहत मिलती है और उनसे मुक्त भी हो सकते है। आत्मा शरीर का राजा बन कर्मेन्द्रियों को नियंत्रित करता है और परमात्मा से स्नेहयुक्त सम्बन्ध जूट जाता है। राजयोग के द्वारा मूल्य भी आते है, जिससे मूल्यनिष्ठ प्रशासन कर सकते है।

ब्रह्माकुमार रोहित भाई, व्यवस्थापक सदस्य, प्रशासन प्रभाग, वलसाड ने सभी मेहमानों, प्रतिनिधियों तथा सभी का सुंदर रीति से आभारदर्शन किया।

ब्रह्माकुमारी पूनम बहन, जोनल को-आर्डिनेटर, प्रशासन प्रभाग, जयपूर ने सत्र का कुशल संचालन किया।